विश्व न्याय मन्दिर

अक्टूबर 2017

उन सबके प्रति जो 'ईश्वर की महिमा' का उत्सव मना रहे हैं

परमप्रिय मित्रों,

हम इस हितकारी सत्य को साध रहे हैं: कि धरती के लोगों को उनके परमेश्वर ने हमेशा याद रखा है। इतिहास के प्रत्येक युग में, उस अज्ञेय 'यथार्थ' ने मानवजाति के आपसी सहयोग और उसकी प्रगति के लिए आवश्यक नैतिक एवं आध्यात्मिक उत्प्रेरणा प्रदान करने की शक्ति से सम्पन्न अपने एक 'संदेशवाहक' को भेजकर इस दुनिया के लिए अपने अनुग्रह के द्वारों को खोला है। मनुष्य जाति के पास भेजे गए इन महान 'प्रकाशपुंजों' में से अनेक के नाम लुप्त हो गए हैं। लेकिन अतीत के इतिहास में से उनमें से कुछ ऐसे भी हैं जो विचारों को आंदोलित करने, ज्ञान के भंडारों को खोलने, और सभ्यता के उत्थान को अनुप्रेरित करने के कारण आज भी जगमगा रहे हैं और आज भी 'उनके' नामों को सम्मान और सराहना प्राप्त है। इन में से प्रत्येक आध्यात्मिक और सामाजिक द्रष्टाओं, सद्गुणों के निर्मल दर्पणों ने ऐसी शिक्षाओं और ऐसे सत्यों का निरूपण किया जिनसे उस युग की अत्यावश्यक जरूरतों का निदान होता था। आज जबकि दुनिया अपनी सर्वाधिक बाध्यकारी चुनौतियों से जूझ रही है, हम बहाउल्लाह को, जिनका जन्म आज से दो सौ साल पहले हुआ था, वस्तुतः ऐसी ही एक 'विभूति' मानते हैं- निश्चित ही 'वह जिनकी' शिक्षाएँ हमें उस युग में ले जाएंगी, जो दीर्घकाल से प्रतिज्ञापित है, जब समस्त मानवजाति शांति और एकता की भावना से एक साथ रहेगी।

अपनी आरंभिक युवावस्था से ही, अपने जानने वाले लोगों के लिए बहाउल्लाह एक खास नियति से सम्पन्न माने जाते थे। संत जैसे चरित्र और असाधारण विवेक से आशीर्वादित और लगता था 'वह' स्वर्ग के सहज प्रकाश से स्पर्शित हों। इसके बावजूद 'वह' चालीस वर्षों के उत्पीड़न सहने के लिए मजबूर हुए, जिसमें दो निरंकुश बादशाहों के आदेश पर एक के बाद एक निर्वासन और कैद, 'उनके' यश को धूमिल करने और उनके अनुयायियों को दंडित करने का अभियान, स्वयं उनके साथ हिंसक व्यवहार, उनकी जान पर शर्मनाक हमला शामिल था। यह सभी 'उन्होंने' मानवजाति के प्रति अपने असीम प्रेम के निमित्त स्वेच्छा से, कांत भाव और सहिष्णुता के साथ, और अपने आततायियों के प्रति भी दया दिखाते हुए सहे। यहाँ तक कि उनकी समस्त भौतिक सम्पत्तियों की जब्ती ने भी 'उन्हें' अविचलित रखा। कोई भी पर्यवेक्षक आश्चर्य कर सकता है कि एक ऐसे व्यक्ति को भला शत्रुता का लक्ष्य क्यों बनाया गया जिसके मन में दूसरों के प्रति इतना परिपूर्ण प्रेम था, वह आम तौर पर सबकी प्रशंसा और सराहना का पात्र हो सकता था, जो अपनी परोपकार-भावना और ऊँचे विचार के लिए प्रख्यात था, और जिसने किसी भी राजनीतिक पद-प्रतिष्ठा को नकार दिया था। जिस किसी व्यक्ति को इतिहास

की रूपरेखा ज्ञात है वह निःसंदेह उनकी इन अग्नि-परीक्षाओं में निहित कारण को समझने में गलती नहीं कर सकता। विश्व में जब कभी भी कोई ईश्वरीय व्यक्तित्व प्रकटित होता है तो सत्ताधीशों की ओर से क्रूर विरोध आरंभ हो जाता है। लेकिन सत्य की रोशनी बुझाई नहीं जा सकती। और इसीलिए इन अलौकिक व्यक्तियों के जीवन में त्याग, वीरता और चाहे जो भी परिस्थिति आ जाये ऐसे 'उनके' शब्दों को चरितार्थ करने वाले कर्म पाते हैं। बहाउल्लाह के जीवन के प्रत्येक चरण में भी यही परिलक्षित होता है। घोर आपदाओं के बावजूद 'वे' कभी भी चुप नहीं रहे, और उनके शब्द अपनी बाध्यकारी शक्ति से सम्पन्न रहे - शब्द जो अंतर्दृष्टि की आवाज से कहे गये थे, और 'उनके' शब्द इस विश्व की व्याधियों का निदान कर रहे हैं और उपचार बता रहे हैं; शब्द, जो न्याय से संबलित हैं, राजाओं और शासकों को उन ताकतों के बारे में चेता रहे हैं जो अंततः उन्हें उनके सिंहासन से गिरा देंगे; शब्द जो आत्माओं को उदात्त बना देते, उन्हें चमत्कृत और रूपांतरित कर देते हैं, स्वार्थ के झाड़-झंखाड़ों से मुक्त होने के संकल्प से भर देते हैं; और शब्द जो स्पष्ट हैं, वशीभूत करने वाले और प्रबल हैं: "यह बात मेरी ओर से नहीं, बल्कि ईश्वर की ओर से है"। ऐसे जीवन के बारे में विचार करते हुए, क्या कोई नहीं पूछ सकता: अगर यह ईश्वर की ओर से नहीं है तो फिर वह क्या है, जो उसकी ओर से है?

इतिहास के सम्पूर्ण कालक्रम में इस संसार को प्रकाशित करने वाले ये परिपूर्ण 'शिक्षक' अपने पीछे पवित्र वचनों की एक पूरी विरासत छोड़ गए हैं। बहाउल्लाह की लेखनी से एक नदी की तरह प्रवाहित होने वाले शब्दों में व्यापक विभिन्नता और उदात्त प्रकृति के उपहार निहित हैं। उनके प्रकटीकरण का साक्षात्कार करने वाला कोई भी व्यक्ति सर्वप्रथम तो बार-बार प्रकट होने वाली उन अत्यंत सुन्दर प्रार्थनाओं से मुग्ध हो उठता है जिनसे आत्मा की अपने रचयिता ईश्वर की समुचित आराधना करने की उत्कंठा शांत होती है। उनके शब्दों के महासिंधु की और अधिक गहराई में जाने पर मानव की चेतना को उसके सच्चे कर्त्तव्य से विमुख करने वाले सांसारिक आवेगों, जिनका उल्लेख भी अनुचित है, के अत्याचारों से मुक्त करने के लिए विधान और नैतिक उत्प्रेरण मिलते हैं। यहाँ भी, ऐसे आदर्श मिलते हैं जिनके आलोक में माता-पिता अपने बच्चों को न केवल अपने समान बल्कि उससे भी अधिक महान अभिलाषाओं के साथ पोषित कर सकते हैं। ऐसी व्याख्याएं भी दी गई हैं जो कबीलों और राष्ट्रों से लेकर एकता की और अधिक उच्चतर अवस्थाओं तक मानवजाति की जटिल यात्रा के कालक्रम में ईश्वर के कृत्य का रहस्योद्घाटन करती हैं। संसार के विभिन्न धर्मों को एक ही अंतर्निहित सत्य की विभिन्न अभिव्यक्तियों में दर्शाया गया है जो एक मूल उद्गम और एक ही उद्देश्य से परस्पर जुड़े हुए हैं: मानवजाति के आंतरिक जीवन और उसकी बाहय दशाओं को रूपान्तरित करना। बहाउल्लाह की शिक्षाएँ, मानव चेतना की उच्चता प्रमाणित करती हैं। उन्होंने जिस समाज की परिकल्पना की है वह उसी उच्चता के योग्य है और ऐसे सिद्धांतों पर आश्रित है जो इसकी रक्षा करते और सुदृढ़ बनाते हैं। 'वह' सामूहिक जीवन के मूल में मानव परिवार की एकता को स्थान देते हैं; स्त्री-पुरुष की समानता का 'वह' स्पष्ट रूप से दावा करते हैं। 'वह' हमारे युग की

दो परस्पर-विरोधी प्रतीत होने वाली शक्तियों - धर्म और विज्ञान, एकता और विविधता, स्वतंत्रता और सुव्यवस्था, व्यक्तिगत अधिकारों और सामाजिक दायित्वों - के बीच के समन्वय स्थापित करते हैं। और उनके महानतम उपहारों में से एक है न्याय, जो उन संस्थाओं में प्रकटित है जो सभी लोगों की प्रगति और विकास से संबद्ध हैं। स्वयं 'उनके' शब्दों में, उन्होंने-''ईश्वर के पवित्र ग्रंथ के पन्नों से वह सब कुछ मिटा दिया है जो मानव-सन्तानों के बीच कलह, विद्वेष और अनिष्ट के कारण थे'' और उसी के साथ ''सहमति, आपसी समझ, पूर्ण एवं स्थायी एकता के परमावश्यक आधार तत्वों का निरूपण कर दिया है।'' क्या कोई नहीं पूछ सकता कि ऐसे उपहारों के प्रति स्वयं हमारी उपयुक्त प्रतिक्रिया क्या होनी चाहिए ?

बहाउल्लाह कहते हैं, "प्रत्येक जिज्ञासु का यह कर्तव्य है कि वह स्फूर्तिमान होकर इस महासिंधु के तटों तक पहुँचने का प्रयत्न करे।" युगों-युगों से एक के बाद एक आने वाले ईश्वरीय संदेशवाहकों द्वारा लाई गई आध्यात्मिक शिक्षाओं ने उन धार्मिक प्रणालियों के माध्यम से अभिव्यक्ति पाई है जो कालक्रम में संस्कृति के पहलुओं में मिल गईं और वे मानव-निर्मित रूढ़ियों में दब गईं। किन्तु यदि उन पहलुओं से परे जाकर देखें तो यह स्पष्ट हो जाता है कि मूल शिक्षाएं उन सार्वभौम मूल्यों की स्रोत रही हैं जिनके माध्यम से विविध जन-समुदायों को एक सामान्य उद्देश्य प्राप्त हुआ है और जिन्होंने मानवजाति की नैतिक चेतना को ढला है। वर्तमान समाज में धर्म की प्रतिष्ठा को काफी हानि उठानी पड़ी है और इसका कारण भी समझा जा सकता है। यदि धर्म के नाम पर कलह और घृणा फैलाई जाये तो उसके बिना रहना ही अच्छा है। तथापि सच्चे धर्म की पहचान उसके सुफलों - लोगों को प्रेरित करने, रूपांतरित करने, एकता के सूत्र में पिरोने, शांति और समृद्धि को पोषित करने की उसकी क्षमता से किया जा सकता है। यह तर्कसंगत विचारों के अनुरूप होता है। और यह सामाजिक प्रगति के लिए अपरिहार्य होता है। बहाउल्लाह का धर्म व्यक्तियों और समुदायों में समीक्षा के आलोक में कार्य करने के अनुशासन को पोषित करता है, और इस तरह से क्रमशः समाज की बेहतरी के लिए कार्य करने के ज्यादा प्रभावी तरीकों के बारे में अंतर्दृष्टि संचित होती है। बहाउल्लाह ने राजनीतिक षड्यंत्रों, राजद्रोह, किन्हीं खास समूहों की आलोचना करके या खुले संघर्ष के माध्यम से सामाजिक परिवर्तन के लिए किए जाने वाले प्रयासों की निंदा की है, क्योंकि उनसे संघर्ष का एक अनवरत चक्र निर्मित होता है और स्थायी समाधान सदा दूर ही बना रह जाता है। 'वह' हमें एक अलग ही किस्म का यंत्र देते हैं। 'वह' अच्छे कर्मों, दयालुता भरी वाणी और सदाचार के लिए हमारा आह्वान करते हैं; 'वह' दूसरों की सेवा और सहयोग पर आधारित कार्य करने का दायित्व सौंपते हैं। और दिव्य शिक्षाओं पर आधारित विश्व-सभ्यता के निर्माण के लिए 'वह' मानवजाति के सभी सदस्यों का आह्वान करते हैं। उनकी इस परिकल्पना की व्यापकता पर विचार करते हुए, क्या कोई नहीं पूछ सकता कि यथार्थतः किस बुनियाद पर मानवजाति भविष्य के लिए आशा का निर्माण करे, अगर इस पर नहीं?

हर भूभाग में, जो लोग बहाउल्लाह के संदेश की ओर आकर्षित हुए हैं और उनकी परिकल्पना के प्रति समर्पित हैं, वे सुव्यवस्थित रूप से यह सीख रहे हैं कि उनकी शिक्षाओं को क्रियान्वित कैसे किया जाए। युवाओं के समूह अपनी आध्यात्मिक पहचान के लिए पहले से अधिक जागरूक हो रहे हैं और अपनी ऊर्जाओं को अपने समाज को विकसित करने में लगा रहे हैं। विभिन्न दृष्टिकोणों के लोग संधान कर रहे हैं कि कैसे कलह एवं अधिकारवाद को परामर्श और समाधानों की सामूहिक खोज से प्रतिस्थापित किया जाए। हर प्रजाति, धर्म, राष्ट्रीयता और वर्ग से आत्माएँ 'एक मानवजाति और सम्पूर्ण पृथ्वी एक देश' की परिकल्पना के निकट एकजुट हो रहे हैं। अनेक लोग जिन्होंने लम्बे समय तक कष्ट भोगे हैं उन्हें अब अपनी आवाज मुखरित होती दिख रही है और वे स्वयं अपने विकास के नायक, संसाधन-सम्पन्न और अपनी स्थिति को पुनःप्राप्त करने वाले बन रहे हैं। गाँवों, पास-पड़ोसों, शहरों और नगरों से ऐसी संस्थायें, समुदाय और व्यक्ति उभर रहे हैं जो एकता के सूत्र में बंधे एवं समृद्ध विश्व के अभ्युदय के लिए साथ मिलकर प्रयास करने के प्रति समर्पित हैं, जो सचमुच धरती पर ईश्वर का साम्राज्य कहे जाने योग्य हो सकता है। बहाउल्लाह के जन्म की दो सौवीं जयन्ती पर, ऐसे बहुत सारे लोग जो इस उपक्रम के अंग रहे हैं वे, अपने आस-पास के उन लोगों तक एक सरल आमंत्रण के साथ अपनी पहुँच बना रहे हैं: इस अवसर का लाभ उठाइए और जानिए कि 'वह' कौन थे और 'उन्होंने' क्या प्रकटित किया है। उन्होंने जो उपाय बताए हैं उन्हें आजमा कर देखिए। उनका प्रकट होना इस बात का पक्का प्रमाण है कि अनगिनत संकटों और चुनौतियों से घिरी इस मानवजाति को भुला नहीं दिया गया है। जब दुनिया भर के इतने सद्इच्छित लोग इतने लम्बे समय से उन समस्याओं के समाधान के लिए ईश्वर से प्रार्थना करते आ रहे हैं, जिनसे वे पृथ्वी रूपी अपने इस घर-परिवार में घिरे हुए हैं, क्या इसमें आश्चर्य की बात है कि उस परमपिता ने उनकी प्रार्थना का उत्तर दे दिया है ?

विश्व न्याय मंदिर